Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

28

सुरेंद्र वर्मा के 'काटना शमी का वृक्ष पद्म पंखुरी की धार से' और विनोद कुमार शुक्ल के 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' का तुलनात्मक अध्ययन

सिमरन शेख
शोधछात्रा

प्रा. डॉ.महेंद्र कुमार रामचंद्र वाढे
मार्गदर्शक
भाऊसाहेब ना.स.पाटिल साहित्य एवं मु.फि.मु.अ.वाणिज्य महाविद्यालय देवपूर धुले.

प्रस्तावना :- इस शोधालेख में उपन्यासकार सुरेंद्र वर्मा और विनोद कुमार शुक्ल की कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन द्वारा दोनों की विचारधारा तथा समाज सापेक्ष दृष्टिकोण की पड़ताल अंर्निहित है। एक तरफ सुरेंद्र वर्मा है , जो एक आधुनिक और यथार्थवादी रचनाकार है। तो दूसरी और विनोद कुमार शुक्ल है , जो अपने अनुभवों को ही अपनी कृति की पार्श्वभूमि बनाते हैं। शुक्ल जी एक गहरे स्तर के विचारक और काफी संवेदनशील प्रकृति के इंसान है। दो अलग-अलग व्यक्तित्व परस्पर चाहे कितने ही भिन्न क्यों ना हो लेकिन उन दोनों मिलानेवाली कोई एक कड़ी तो ऐसी अवश्य ही होती है जो उन्हें जोड़ती है। इसी के साथ कुछ कडीया ऐसी भी होती है जो उन दोनों की सर्वथा भिन्न बनाए रखती है। जिससे वह उनकी एक अलग पहचान कायम कर सके। प्रस्तुत शोधालेख सुरेंद्र वर्मा के काटना शमी का वृक्ष पद्म पंखुरी की धार से और विनोद कुमार शुक्ल के दीवार में एक खिड़की रहती थी का तुलनात्मक अध्ययन का विवरण दिया जाएगा।

उद्देश्य :-

आज के दौर में चमत्कृतीपूर्ण साहित्य की संख्या कहीं ना कहीं घटती जा रही है। क्योंकि समकालीन रचनाकार अधिकतर यथार्थ एवं आदर्श की ओर उन्मुख है। ऐसे में शुक्ल जी की इस कृति में फैंटेसी का कौन सा नया रूप है यह जानना , इसी के साथ समकालीन दौर में हर कोई सच जानना चाहता है , मनुष्य की सच के प्रति जिज्ञासा किन-किन मोडों से होकर गुजरती है और उनके उत्तर वर्मा जी ने कैसे अपनी इस कृति में दिए हैं यह जानना भी शामिल है। यह तो पहले ही स्पष्ट हो चुका है कि , वर्मा जी और शुक्ल जी एक दूसरे से सर्वथा भिन्न है लेकिन दोनों ने हीं आज के युग में कुछ अलग प्रस्तुत करना चाहा है। इस धारा से साहित्य की कौन सी प्राचीन प्रवृत्ति की ओर संकेत किया जा रहा है। इसका अन्वेशन प्रस्तुत शोधालेख का उद्देश्य है।

मुख्य शोधालेख :-

प्रस्तुत शोधालेख मे वर्मा जी और शुक्ल जी की कृतियों में साम्य बिंदूओं पर विचार किया जाएगा। इस तुलनात्मक अध्ययन को गहनता देने में सहायक होंगा।

१) **व्यक्ती और समाज के संबंध** :-

चयनित उपन्यासों में व्यक्ति एवं समाज के संबंधों को बड़ी गहराई से चित्रित किया गया है। सर्वप्रथम बात करें शुक्ल जी के उपन्यास "दीवार में एक खिड़की रहती थी" कि तो हम पाएंगे कि , इस कृति की कथा भूमि एक छोटे से गांव से ली गई है ; और जहां गांव का चित्रण आ जाता है वहां सामान्य जनजीवन की झांकी तथा वहां की निश्चछल सामाजिक रचना भिन्न-पैलुओं द्वारा बड़ी सरलता से देखी जा सकती है। व्यक्ति चाहे जहां रहे वह अपने स्वतंत्रता को कभी नहीं छोड़ता लेकिन ग्रामीण स्थलों पर इन मुद्दों पर अल्पाधिक समझौता करके ही रहना पड़ता है। क्योंकि ग्रामीण अपने बंधे बंधाएं ढांचे में रहना ही पसंद करते हैं। ऐसे में उन्हें ज्यादा आजादी भी नहीं भाती इसी के चलते कई बार ग्रामीण समाज में द्वंद भी दिखाई दे जाता है। सामाजिक संघर्ष और द्वंद्व की स्थिति के चलते भी हमें कुछ जगहों पर इस कृति में सामाजिक सलोखा जैसे कि एक के द्वारा दूसरे की मदद करना आदि जैसे चित्रण भी इस कृती के पात्रों संवादों के माध्यम से देखने को मिलते हैं। " ऑटो नहीं मिली ? "

" नहीं मिली। " रघुवर प्रसाद ने भी धीरे – से कहा।

" हाथी पर बैठेंगे ? महाविद्यालय जाना है न ? "

परस्पर सहयोग और निस्वार्थ मदत करना हर समाज की जड के समान है जिसपर समाजरुपी वृक्ष सुदृढता से खडा हो पाता है। इस तथ्य को इसी कृती में चित्रित अन्य दृश्यों के माध्यम से भी समझा जा सकता है। जैसे विभागाध्यक्ष का रघुवर प्रसाद को साईकल देना , पेड बैठे युवक का हाथी के भोजन प्रबंधन मे सहयोग देना आदि सभी मनुष्य के भीतर मनुष्यता जिवंत होने के प्रमाण है। वहीं दूसरी ओर वर्मा जी के उपन्यास "काटना शमी का वृक्ष पद्म पंखुरी की धार से" में भी यह संबंध बरकरार दिखाई देता है , लेकिन साथ ही इस कृति में कुछ अन्य कारक भी देखने को मिलते हैं। जिसमें प्रथम है 'कला और समाज' व्यक्ति का दृष्टिकोण संपन्न और परिष्कृत करने का कार्य कला करती है , और इस संपन्न दृष्टिकोण वाले व्यक्तियों का झुंड ही एक मजबूत समाज की नीव होती है ; लेकिन ग्रामीणों को यह प्रायः मिथ्या ही प्रतीत होता है। ऐसे में गांव की पिछड़ी मानसिकता सामने आती है। शायद यही कारण है कि गांव तथा शहर जैसी दो सभ्यताएं आज प्रचलित है। शहरों के लाख नुकसान गिनाए जा सकते हैं , मगर उसकी एक उपयोगिता इन सब पर भारी है , और वह यह कि शहरों में सबको समान संधी मिलती है।

©Copyright 2024 *ADRJ*. All Rights Reserved

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

"कहां जा रहे हो वत्स?"
श्वेत उष्णता में वृद्ध सामने खड़े थे।
"उज्जयिनी तात्पर्य !"
"कोई वृत्ति मिली है ?"
कालिदास ने नकार में सिर हिलाया।
" फिर ?" वह चिंता में पड़ गये।
कालिदास ने एक क्षण सोचा , "सौभाग्य - लक्ष्मी के संधान के लिए -"
" उच्च शैक्षणिक उपाधियां होगी ?"
कालिदास ने फिर नकार में सिर हिलाया।
" किसी हस्तकला में पारंगत होंगे ?"
"नहीं पूज्यवर -"
वह उलझन में पड़ गये , "तो करते क्या हो ?"
" शब्द शिल्पी हूँ!"
"तो यह क्यों नहीं कहते कि कोशकार हूँ!"वह मुस्कुराए ,

यहां इस गद्यांश को देखने से एक बात तो स्पष्ट हो जाती है कि , सामाजिक सलोंखा एवं सामाजिक सरोकार का तथा परस्पर मदद का भाव यह हर समाज की नीव होती है। जिसका चित्रण शुक्ल जी के उपन्यास में भी भली भांति देखने को मिलता है , और वर्मा जी ने भी इस तथ्य को आगे बढ़ाने में अपनी कृती के माध्यम से इसका पर्याप्त चित्रण किया है।घर परिवार एवं अपने मोहल्ले से निकलने के बाद इंसान जिस हेतु से बाहर जाता है। वहा उसका संपर्क सीधा समाज के जन सामान्यों से आता है। यह संबंध रोज प्रस्थापित होता है। भले ही वह चाहे कुछ घंटों का क्यों ना हो ; लेकिन धीरे-धीरे उसमें इतनी मजबूती आ जाती है कि , एक दिन भी उसमें कोई बाधा आने पर हमें अरुचि सी महसूस होने लगती है। व्यक्ती उसे वस्तु अथवा घटना को ऐसे स्मरण करता है जैसे सुदुर निवासीत कोई रक्त संबंधी। शायद यहीं व्यक्ति और समाज का ऐसा अटूट संबंध है , जो दिखाई नहीं देता ; जिसका कोई प्रमाण नहीं है। पर वह हमारी भावनाओं में बसता है। हमारी दिनचर्या का एक अविभाज्य हिस्सा बनता चला जाता है। जिसका चित्रण इन दोनों चयनित उपन्यासों में हमें देखने को मिलता है।

२) **यथार्थ और कल्पना** :-

दोंनो चयनित उपन्यास कृतियों मे यथार्थ और कल्पना का मिश्रण बडी महीनता एवं यथासंभव स्थानों पर ही किया गया है। शुक्ल जी और वर्मा जी अपने पात्रों को विचारशील और अपने विवेक को समय-समय पर परिष्कृत करनेवाले व्यक्ति के रुप में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने के अभिलाषी है। कदाचित इसीलिए इन कृतियों मे कहीं कहीं तो ऐसे भी परिदृश्य दिखाई देते है जो सच और फैंटेसी (कल्पना) को एकसाथ चित्रित कर देते है। जैसे शुक्ल जी के उपन्यास का यह गद्यांश "रघुवर प्रसाद सोनसी के पास इस तरह आए जैसे स्वप्न में आए हों फिर स्वप्न से बाहर आ गए हों। स्वप्न के अंदर और बाहर में अंतर नहीं था।" "दिवार में एक खिडकी रहती थी " उपन्यास का यह चित्रण वर्मा जी की कृती के गद्यांश के बगैर कुछ अधुरा सा लगता है। "दस दिन से उत्तेजित था कालिदास। श्मश्रु बढ़ गए थे। उत्तेजना में आशंका घुली - मिली थी - वरण् भय - जैसी कुछ संज्ञा दी जा सकती है उसकी मनः स्थिति को।" शुक्ल जी के उपन्यास में चित्रित नायक और नायिका के द्वारा तथा इस कृति का प्रमुख आकर्षण खिड़की और शहरी जीवन के माध्यम से कल्पना और यथार्थ का रेखांकन किया गया है। नायक की पत्नी सोनसी की उपस्थिति तथा रघुवर प्रसाद के विचार एक समन्वय दर्शाते हैं , जो उनके जीवन को एक नए अर्थ और उद्देश्य से जोड़ता है। "रघुवर प्रसाद अच्छा पढ़ाते थे। गणित पढ़ते थे। कक्षा में पढ़ते समय अधिकांश समय उनकी पीठ विद्यार्थियों की तरफ रहती। पीठ घुमाए बोलते हुए तख्ते पर लिखते जाते।" इसी के साथ ही नायक के घर की खिड़की और उसका शहरी जीवन भी जिसमें वह एक अध्यापक है , घर में कमाने वाला एकलौता एवं उसी के जिम्मे मां-बाप तथा छोटा भाई और अब पत्नी भी है। नायक एक निजी महाविद्यालय में कार्यरत है ; और मात्र 800 माह तनख्वाह पाने वाला जनसाधारण मनुष्य है। जो अपनी निजी जिंदगी की उदासी को खिड़की के परे छोड़कर अपनी कल्पना के संसार से थोड़ी - सी जिजीविषा इकट्ठी कर लेता है। इसी पैलू को वर्मा जी ने भी अपने उपन्यास में जगह दी है। उनके नायक कालिदास को भी कुछ चुनिंदा लोग ही समझ पाए हैं। वह यथार्थ जीवन में तो प्रति एक से आहत ही नजर आता है। ऐसे में उसे उसकी कविता और उसमें समाहित निजी संसार संभाल लेता है। जो उसके आंतरिक संघर्ष को उजागर भी करता है , तथा उसकी इच्छाओं की पूर्ति भी करता है। "सन्त्रास और उत्तेजना से कम्पायमान कालिदास भीतर घुसा। आलोकवर्धन को ऐसे देखा , जैसे झींगुर एरावत को देखता है।" वर्मा जी के इस उपन्यास में संबंधों की जटिलता एवं उसमें आए उतार चढ़ाव भी यथार्थ और कल्पना का अनुचित समन्वय करते नजर आते हैं। जहां कालिदास चाहता है कि मातुल

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

उसे समझे वहां वे दुनियानवी बातों के खंजारों से नायक की इच्छाओं की हत्या कर देते हैं। "बीस वर्ष पहले श्वासोत्सर्ग करती अपनी छोटी बहन को वचन दिया था मैंने गीता पर हाथ रखकर कि तुम मेरे जीवन की सबसे पावन प्रतिबद्धता रहोगे - कि मैं तुम्हारा कुछ बना दूँगा।"
यह चित्रण बताता है की कल्पना आल्हाददायी है। जबकि यथार्थ क्रूर है। एक ओर शुक्ल जी का यथार्थ उब और एक मृदु झुंझलाहट पैदा करता है। जिस कारण नायक रघुवर प्रसाद सघन रात्रि में भी खिड़की से कूद कर उसे पर चला जाता है। वही दुसरी और कालिदास का मन पूर्णतः अपने साहित्यिक संसार मे ही रमा रहता है। वह इस निंदयी यथार्थ मे लौटना नही चाहता।

३) **स्त्री – पुरुष मनोविज्ञान** :-

शुक्ला जी के उपन्यास में स्त्री पुरुष मनोविज्ञान बड़ी सरलता और गहराई से दर्शाया गया है। क्योंकि इस उपन्यास में पग - पग पर स्वप्न का वर्णन अधिक मात्रा में पाया जाता है। सोनसी (नायक की पत्नी) का नायक पर प्रेम तथा उसकी पतिव्रता की भावना रघुवर प्रसाद (नायक) के जीवन को पूर्णतः बदल देती है। इसी के साथ वह उसकी आकांक्षाओं को पूर्ण करने में भी सहायक सिद्ध होती है।
"उन्होंने सोचा कि आज शाम पत्नी - बच्चों के साथ इस तरफ आएंगे।" (पुरुष मनोविज्ञान)
"पत्नी ने चहककर रघुवर प्रसाद से कहा तुम्हारा रंग फुलचुक्की के समान है।" (स्त्री मनोविज्ञान) नायक और नायिका के मृदु संबंध ही उनके संसार की नीव है। इसी के साथ एक दूसरे का सहवास और सम्मान की भावना ही इन दोनों के मध्य का वह जोड़ है , जो उन्हें सदैव जोड़े रखता है। वही वर्मा जी के उपन्यास में भी यह पैलू दिखाई देते हैं , लेकिन वियोग और अलगाव इन भावनाओं को बिखरा देता हैं। उनकी कृति में स्त्री - पुरुष के बीच प्रेम और आकर्षण की भावना को बहुत ही गहराई से चित्रित किया गया है। कालिदास मुग्धा तथा प्रियंगुमंजरी के संबंधों में प्रेम , आकर्षण तथा संघर्ष की भावना दृष्टिगत होती है। इसी के साथ इस कृति में स्त्री के आत्मत्याग की भावना को चरमोत्कर्ष पर बताया गया है। मुग्धा कालिदास की साथी ना बन सकी लेकिन उसने हमेशा कालिदास के लिए कुछ ना कुछ त्याग तो किया है। स्त्री का यह रूप स्त्री - पुरुष मनोविज्ञान की सच्ची तस्वीर दिखाता है। वर्मा जी और शुक्ल जी दोनों ने मनोविज्ञान को अपनी कृति में अलग-अलग रूप में स्थान देकर इसे मानवीय संवेदना से जोड़ने का प्रयास किया है।

४) **भाषा में प्राकृतिकता** :-

"विनोद कुमार शुक्ल हिंदी के उन कुछ विशिष्ट उपन्यासकारों में है जिनकी भाषा और शिल्प की अपनी निजी पहचान है। "दीवार में एक खिड़की रहती थी" मे पूंजीवादी शहरी जीवन शैली का प्रतिरोध प्रतीकात्मक रूप से व्यक्त किया गया है।" उपन्यासकार ने इस कृती मे प्रकृति की हर झलक को प्रस्तुत करने की चेष्टा की है। ऐसा चित्रण और ऐसी भाषा को यदि प्राकृतिक भाषा की संज्ञा दी जाए तो यह अतिश्योक्ति न होंगा। लेखक ने जल , चट्टान , पर्वत , वन , वृक्ष , पशु - पक्षी , सूर्योदय , सूर्यास्त , चांदनी , हवा जैसे अनेक प्राकृतिक तत्वों को संलग्न किया है। इस उपन्यास की कहानी में। किराए के कमरे , तालाब , पेड़ - पौधे आदि छोटे-छोटे दृश्य में प्रकृति की विद्यमानता समाहित है। इनके माध्यम से मुख्य पात्रों के आंतरिक जीवन , उनकी सीमाओं , आकांक्षाओं , की कलमबंदी होती है। "दीवार" अर्थात जीवन की सीमाएं। "खिड़की" अर्थात संभावनाएं , खुलापन , बाहर की दुनिया। प्रकृति के दृश्य जब खिड़की से जुड़ते हैं तो यह इस प्रतिक को और अधिक गहराई देते हैं। सुरेंद्र वर्मा की भाषा खड़ी बोली हिंदी पर आधारित है जो आधुनिकता , बिंबो और प्रतिकों से युक्त है ; लेकिन इसमें भावनात्मक गहराई और संवादों की सटीकता भी है। उनकी भाषा में निर्भयात्मक कथानक और पात्रों के साथ-साथ पारंपरिकता और आधुनिकता का अनोखा मेल दिखता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में विभिन्न प्रकार के शब्द जैसे की अरबी , फारसी और संस्कृत के कोमल शब्दों का प्रयोग किया है। जिससे उनकी भाषा को एक विशिष्ट पहचान मिली है। चयनित दोनों उपन्यासों की भाषा में प्रकृती के परिदृश्य बडे मनमोहक है।

काटना शमी का वृक्ष पद्य में पंखुरी की धार से" और "दीवार में एक खिड़की रहती थी" उपन्यास में अंतर।

कथानक :-

वर्मा जी का उपन्यास एक कवि अथवा रचनाकार के जीवन पर आधारित कथा को लेकर चलता है , जो अपने प्रेम और संघर्ष के माध्यम से एक दिन स्वयं को उज्जैन नगरी में प्रमाणित करना चाहता है। वहीं दूसरी ओर शुक्ल जी का उपन्यास एक साधारण मध्यवर्गीय समाज तथा नवदंपत्ती के मधुर संबंधों को केंद्र में लिए हुए हैं।

पात्र :- 'काटना शमी का वृक्ष पद्य पंखुड़ी की धार से' उपन्यास के पात्र यथार्थ और आदर्श आचरण करते नजर आते हैं। उपन्यासकार सुरेंद्र वर्मा मानवीय भौतिक जीवन में डूब कर लिखने वाले रचनाकार है। इसीलिए उनके पात्र भी वैसे ही है। वहीं शुक्ल जी का उपन्यास 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' के पात्र यथार्थ से अधिक कल्पना में अपना जीवन यापन करते नजर आते हैं। जहां किसी प्रकार का कोई बंधन नहीं है। शुक्ल जी चमत्कार में जीवन को ढालकर लिखने वाले रचनाकार है।

शैली :- शुक्ल जी का उपन्यास सरल एवं वास्तविक शैली में और वर्मा जी का उपन्यास काव्यात्मक और प्रतीकात्मक शैली में लिखा गया है।

उद्देश्य :- शुक्ल जी के उपन्यास का मुख्य उद्देश्य निम्न मध्य वर्ग के जीवन को उसकी सादगी , मासूमियत और संवेदना के साथ चित्रित करना है। जिसमें दिखाया गया है कि , साधारण जीवन में भी खुशियां और आश्चर्य खोजे जा सकते हैं। यह उपन्यास मानवीय संबंधों , प्रकृति के साथ

सामंजस्य और छोटी-छोटी बातों में छिपे सौंदर्य का उत्सव मनाता है। इसी के साथ वर्मा जी के उपन्यास का मुख्य उद्देश्य कला और कलाकार के संघर्ष को दर्शना है। विशेषतः जब वे पारिवारिक और सामाजिक बढ़ाओ से गुजरते हैं। यह कालिदास की कहानी के माध्यम से दिखता है कि एक प्रतिभाशाली कलाकार को अपनी कला की अभिव्यक्ति के लिए कितना संघर्ष करना पड़ता है , और उसे कैसे उसके अपने ही उसकी प्रतिभा को कुचलते है।

निष्कर्ष :-उपन्यासकार सुरेंद्र वर्मा का जन्म 1947 ई.स में और शुक्ल जी का जन्म 1937ई.स में हुआ। देखा जाए तो दोनों परस्पर समकालीन ही है। परंतु इन दोनों उपन्यासों में दिखने वाला अंतर दोनों की पूर्व पश्चिम विचारधारा को दर्शाता है। प्रस्तुत शोधालेख के निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि , सामान्य मनुष्य अगर यथार्थ में जीना चाहे तो उसके हिस्से में पर्याप्त मात्रा में कुंठा आती है। जो वर्मा जी ने अपनी कृती में बखूबी बताया है , लेकिन वर्मा जी आगे चलते-चलते इतिहास की तरफ भी थोड़ी तांका झांकी करते हैं नजर आते हैं। इसलिए उन्होंने अपनी इस कृति में कालिदास को चुना और उसमें संस्कृत भाषा का पूट भी दिया ; लेकिन शुक्ल जी ऐसे नहीं है। वह मनुष्य को यह समझते हुए नजर आते हैं कि , अगर वह अपनी इच्छाएं अथवा अपनी मनमर्जीयां अपनी कल्पनाओं एवं अपने सपनों में पूर्ण कर ले तो जिंदगी कितनी आसान हो जाती है।

संदर्भ ग्रंथ

1. दीवार में एक खिडकी रहती थी – विनोदकुमार शुक्ल – हिंदी युग्म – संस्करण पाँच
2. पृष्ठ क्रमांक - 15
3. पृष्ठ क्रमांक - 17
4. पृष्ठ क्रमांक - 63
5. पृष्ठ क्रमांक - 68
6. पृष्ठ क्रमांक - 136
7. हिंदी साहित्य का इतिहास - मि. रोहित मांगलिक – Google books
8. काटना शमी का वृक्ष पद्म पंखुरी की धार से – सुरेंद्र वर्मा – भारतीय ज्ञानपीठ - संस्करण चार
9. पृष्ठ क्रमांक - 37
10. पृष्ठ क्रमांक - 155
11. पृष्ठ क्रमांक - 156
12. पृष्ठ क्रमांक - 161
13. पृष्ठ क्रमांक - 193